UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

# राजनीति विज्ञान

CLASS-XII

# मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

# राजनीति विज्ञान (11)

# MODEL PAPER 3 (RBSE)

## कक्षा-XII

**समय : 3 घंटे 15 मिनट** **पूर्णांक : 80**

**परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश**

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

### खण्ड-"अ"

**1. बहुविकल्पी प्रश्न -**

**(i) निम्न लिखित में से वर्तमान समय में कौन सा सैन्य संधि संगठन अस्तित्व में है? [1]**

(अ) नाटो (ब) सीटो
(स) सेंटो (द) वारसा पैक्ट

**(ii) मिखाइल गोर्बाचेव सोवियत संघ की कम्प्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कब बने? (RBSE - 2016) [1]**

(अ) 1970 में (ब) 1980 में
(स) 1985 में (द) 1990 में

**(iii) गोर्बाचेव का तख्तापलटने के विरोध में किसकी भूमिका अहम थी? [1]**

(अ) लियोनिड ब्रेझनेव (ब) निकिता ख्रुश्चेव
(स) व्लादिमीर पुतिन (द) बोरिस येल्तसिन

**(iv) शिमला समझौते का संबंध किन देशों से है? [1]**

(अ) भारत - बांग्लादेश (ब) भारत - श्रीलंका
(स) भारत - पाकिस्तान (द) भारत - नेपाल

**(v) भारत संयुक्त राष्ट्र संघ में कब शामिल हुआ? [1]**

(अ) 24 अक्टूबर 1945 (ब) 30 अक्टूबर 1945
(स) 20 अक्टूबर 1945 (द) 10 अक्टूबर 1945

**(vi) संयुक्त राज्य अमेरिका पर आतंकवादियों द्वारा आक्रमण कब किया गया? [1]**

(अ) 2003 (ब) 2005
(स) 2001 (द) 2004

**(vii) प्रथम आम चुनाव कब संपन्न करवाए गए थे। [1]**

(अ) 1950-51 (ब) 1951-52
(स) 1952-53 (द) 1953-54

**(viii) निम्नलिखित में से आर्थिक विकास के लिए गांधीवादी योजना किसके द्वारा प्रस्तुत की गई थी? [1]**

(अ) जयप्रकाश नारायण (ब) श्रीमननारायण
(स) विश्वेश्वरैया (द) जवाहरलाल नेहरू

**(ix) भारत में पहला परमाणु परीक्षण पोकरण में कब किया गया था? [1]**

(अ) सन् 1974 (ब) सन् 1980
(स) सन् 1990 (द) सन् 1994

**(x) आपातकाल के दौरान भारतीय संविधान का कौन-सा संशोधन पारित हुआ। [1]**

(अ) 42वाँ संविधान संशोधन (ब) 44वाँ संविधान संशोधन
(स) 61वाँ संविधान संशोधन (द) 86वाँ संविधान संशोधन

**(xi) 'उत्तर हर दिन बढ़ता जाए, दक्षिण दिन - दिन घटता जाए' यह लोकप्रिय नारा किस आन्दोलन के अन्तर्गत दिया गया। [1]**

(अ) बोडोलैण्ड आन्दोलन (ब) असम आन्दोलन
(स) गोरखालैण्ड आन्दोलन (द) द्रविड़ आन्दोलन।

**(xii) मुस्लिम महिला अधिनियम कब पारित किया गया? [1]**

(अ) 1990 (ब) 1986
(स) 1993 (द) 1995

**2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -**

**(i) शीत युद्ध वर्ष __________ से वर्ष __________ तक चला। [1]**

**(ii) जनवरी 1997 को संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव ________ ने जाँच शुरू करवाई कि सुधार कैसे कराए जाएँ। [1]**

**(iii) एक सामान्य आदमी के लिए रोजाना _______ कैलोरी के आहार की जरुरत होती है। [1]**

**(iv) सिन्धु नदी जल संधि पर ________ तथा ________ ने हस्ताक्षर किए। [1]**

**(v) सन् 1975 ई. में जनता के _________ मार्च का नेतृत्व जयप्रकाश नारायण ने किया। [1]**



UTKARSH CLASSES
Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(vi) मई 1991 में ____________ की हत्या कर दी गई। [1]

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

(i) 'बाल्टिक देश' के नाम से किन देशों को जाना जाता है? [1]

(ii) 'दूसरी दुनिया' किसे कहा जाता है? इसका नेतृत्व किस देश ने किया? [1]

(iii) 1917 की साम्यवादी क्रांति कहाँ तथा किसके नेतृत्व में की गई? [1]

(iv) रूस के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे? [1]

(v) अमेरिका ने युगोस्लाविया पर क्यों आक्रमण किया? [1]

(vi) 1998 में अमेरिकी दूतावासों पर किन देशों में आंतकी हमले किये गए थे? [1]

(vii) 'मानवता की साझी विरासत' से क्या अभिप्राय है? [1]

(viii) 1980 के दशक की किस घटना ने विश्व समुदाय की आँख खोल दी। [1]

(ix) वैश्वीकरण के लिए जिम्मेदार कोई दो कारण बताइए। [1]

(x) आर्थिक वैश्वीकरण को बढ़ावा देने में किन अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की अहम् भूमिका रही है। [1]

(xi) नर्मदा नदी किन -किन राज्यों से होकर गुजरती है? [1]

(xii) सरदार सरोवर परियोजना का विरोध क्यों किया गया? [1]

## खण्ड-"ब"

लघूत्तरात्मक प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 50 शब्द)

4. अमेरिका ने 'ऑपरेशन एंड्युरिंग फ्रीडम' किसके विरूद्ध चलाया? [2]

5. सर क्रिक विवाद का संबंध किन दो देशों से है? [2]

6. भारत तथा चीन के बीच किन मतभेदों के कारण 1962 का सैनिक संघर्ष हुआ था? [2]

7. आणविक ऊर्जा एजेंसी का क्या कार्य है? [2]

8. न्याय युद्ध क्या है? स्पष्ट कीजिए। [2]

9. पर्यावरण की सुरक्षा से संबंधित संधियों के नाम लिखों। [2]

10. वैश्वीकरण के चलते किस कारण से अब विचारों के प्रवाह में राष्ट्रीय सीमाओं की बाधा (रुकावट) नहीं रही है ? [2]

11. भारतीय राजनीति में डॉ.बी. आर अंबेडकर के योगदान का उल्लेख कीजिए। [2]

12. 'गैर कांग्रेसवाद' का नारा कब व किस नेता के द्वारा दिया गया था तथा इसका क्या परिणाम निकला? [2]

13. कांग्रेस की फूट के पश्चात् कौनसे दो राजनीतिक दल उभरे तथा इसका क्या परिणाम हुआ? [2]

14. भारत सरकार के किस कार्य ने मछुआरों की जिंदगी को बड़े तौर पर प्रभावित किया? इन मछुआरों ने राष्ट्रीय स्तर पर कौन-सा संगठन बनाया? [2]

15. रामास्वामी नायकर (पेरियार) का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए। [2]

16. आपके विचार में, क्या आनंदपुर साहिब प्रस्ताव संघात्मकता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक तर्क था अथवा एक अलग सिख राष्ट्र के पक्ष में? [2]

## खण्ड-"स"

दीर्घउत्तरीय प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द)

17. उड़ीसा पॉस्को प्लांट को किन आधारों पर जन विरोध का समाना करना पड़ा? [3]

18. 1962 में हुए चीन के युद्ध ने किस प्रकार भारत की छवि को देश और विदेश में धक्का पहुँचाया? किन्हीं चार बिन्दुओं की व्याख्या कीजिए। [3]

19. गुजरात आन्दोलन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। [3]

20. 1989 के बाद की अवधि में भारतीय राजनीति के मुख्य मुद्दे क्या रहें हैं? इन मुद्दों से राजनीतिक दलों के आपसी जुड़ाव के क्या रूप सामने आए हैं? [3]

## खण्ड-"द"

निबन्धात्मक प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 250 शब्द)

21. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखों? [4]

(i) शीतयुद्ध का अर्थ

(ii) शीतयुद्ध कालीन सैन्य संगठन

(iii) महाशक्तियों द्वारा छोटे देशों को अपने गुटों में शामिल करने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

अथवा

गुटनिरपेक्ष देशों ने नव अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग क्यों की? कारण समझाते हुए नव-अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

22. यूरोपीय संघ के गठन की प्रक्रिया को समझाइये। [4]

अथवा

चीन के आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया को चरणबद्ध रूप से समझाइए।

23. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की प्रमुख चुनौतियाँ कौन-कौन सी थी तथा इन चुनौतियों का किस प्रकार समाधान किया गया? (राजस्थान बोर्ड 2015) [4]

अथवा

'आजाद हिन्दुस्तान का जन्म अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में हुआ।' कथन को स्पष्ट कीजिए तथा बताइए कि आजाद भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाने के लिए हमारे नेता गणों ने क्या-क्या प्रयास किए?



UTKARSH CLASSES
Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

**उत्तरमाला मॉडल पेपर -03**

**खण्ड-"अ"**

**1. बहुविकल्पीय प्रश्न -**

**(i) [अ]**

नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) वर्तमान समय में अस्तित्व में है। जन्म के समय इसकी संख्या 12 थी जबकि वर्तमान समय में यह संख्या बढ़कर 30 हो चुकी है।

**(ii) [स]**

मिखाइल गोर्बाचेव 1985 में सोवियत संघ के राष्ट्रपति बने तथा सोवियत संघ में सुधारों की प्रक्रिया प्रारम्भ की।

**(iii) [द]**

बोरिस येल्तसिन ने गोर्बाचेव के तख्तापलट का विरोध किया जिससे वे लोकप्रिय नेता बनकर उभरें तथा सोवियत संघ के पतन के बाद रूस के प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति बने।

**(iv) [स]**

1971 के भारत-पाक युद्ध के पश्चात् 3 जुलाई 1972 को शिमला समझौता इंदिरा गांधी व जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच में संपन्न हुआ।

**(v) [ब]**

30 अक्टूबर 1945 को भारत संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बना अत: भारत संयुक्त राष्ट्र संघ संस्थापक सदस्य है।

**(vi) [स]**

11 सितम्बर 2001 को अमेरिका पर आतंकी हमला किया गया जिसमें अमेरिका के लगभग 3 हजार नागरिक मारे गए।

**(vii) [ब]**

1951-52 में प्रथम आम चुनाव संपन्न करवाए गए। इन चुनावों को 1952 का चुनाव कहकर पुकारा जाता है।

**(viii) [ब]**

श्रीमननारायण द्वारा गांधीवादी योजना प्रस्तुत की गई।

**(ix) [अ]**

भारत ने 1974 के मई महीने में पोकरण में पहला परमाणु परीक्षण किया।

**(x) [अ]**

42वाँ संविधान संशोधन 1975 में घोषित आंतरिक आपातकाल के दौरान 1976 में किया गया। इसे Mini Constitution कहा जाता है।

**(xi) [द]**

आजादी के बाद द्रविड़ आंदोलन के अंतर्गत हिन्दी भाषा तथा उत्तर भारत की संस्कृति का विरोध करते हुए यह नारा दिया गया।

**(xii) [ब]**

1985 के शहबानो मामलें के पक्ष में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को पलटते हुए सरकार ने 1986 में 'मुस्लिम महिला अधिनियम' पारित किया।

**2. रिक्त स्थान की पूर्ति -**

**(i)** 1945, 1991

**(ii)** कोफी अन्नान

**(iii)** 2450

**(iv)** जवाहरलाल नेहरू, अय्यूब खान

**(v)** संसद

**(vi)** राजीव गांधी

**3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -**

**(i)** बाल्टिक सागर के पास स्थित देश लिथुआनिया, एस्टोनिया व लेटविया को 'बाल्टिक देश' कहा जाता है।

**(ii)** 'दूसरी दुनिया' साम्यवादी देशों को कहा जाता है, जिसका नेतृत्व सोवियत संघ ने किया।

**(iii)** 1917 की साम्यवादी क्रांति रूस तथा आस-पास के क्षेत्रों में हुई। यह क्रांति ब्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व में की गई थी।

**(iv)** सोवियत संघ के पतन के पश्चात उसका उत्तराधिकारी रूस बना तथा रूस के प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन बने।

**(v)** युगोस्लाविया ने अपने प्रांत कोसोवो में अल्बानियाई लोगों के आंदोलन को कुचलने के लिए सैन्य कार्यवाही की थी। इसके विरोध में अमेरिका ने युगोस्लाविया पर 1999 में आक्रमण किया।

**(vi)** नेरोबी (केन्या), दारे-सलाम (तंजानिया)

**(vii)** विश्व के कुछ हिस्से और क्षेत्र किसी एक देश के संप्रभु क्षेत्राधिकार से बाहर होते हैं। इसीलिए उनका प्रबंधन साझे तौर पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा किया जाता है। इन्हें 'वैश्विक संपदा' या 'मानवता की साझी विरासत' कहा जाता हैं।

**(viii)** 1980 के दशक के मध्य में अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन परत में छेद की खोज एक आँख खोल देने वाली घटना थी।

**(ix)** 1. प्रौद्योगिकी, 2. लोगों की सोच में विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव का बढ़ना।

**(x)** अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक।

**(xi)** नर्मदा नदी मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र तीनों राज्यों से होकर गुजरती है।

**(xii)** सरदार सरोवर परियोजना से पर्यावरण को खतरा था तथा स्थानीय लोगों को विस्थापन का सामना करना पड़ता इसलिए इसका विरोध किया गया।



Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

## खण्ड-"ब"

**लघूत्तरात्मक प्रश्न -**

**4.** अमेरिका पर 9/11 के आंतकी हमले के विरूद्ध अमेरिका ने आंतकवाद के विरूद्ध वैश्विक अभियान छेड़ा जिसे 'ऑपरेशन इण्ड्यूरिंग फ्रीडम' के नाम से जाना जाता है। इस अभियान के दौरान अमेरिका ने आतंकी हमले के विरूद्ध आंतकी ठिकानों पर सैनिक कार्यवाही की तथा आतंकियों को मौत के घाट उतारा तथा कुछ आंतकियों को पकड़कर (ग्वान्तानामो-बे) नामक खुफिया जेल में रख गया।

**5.** सर क्रिक 96 किलोमीटर लंबी सीमा रेखा भारत-पाकिस्तान के बीच में है भारत के कच्छ तथा पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में यह स्थित है तथा यह दोनों देशों के बीच सीमा विवाद है।

**6.** (i) 1959 में दलाईलामा को शरण दिए जाने के कारण चीन, भारत से नाराज था।

(ii) चीन एशिया में सर्वोच्च शक्ति बनना चाहता है, इसलिए शक्ति प्रदर्शन के लिए भी चीन ने भारत पर आक्रमण किया।

**7.** यह संगठन परमाण्विक ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने और सैन्य उद्देश्यों में इसके उपयोग को रोकने के लिए कार्य करता है। इस संगठन के अधिकारी नियमित रूप से विश्व की परमाण्विक सुविधाओं की जांच करते हैं, जिससे नागरिक परमाणु संयंत्रों का इस्तेमाल सैन्य उद्देश्यों के लिए रोका जा सके।

**8.** आज लगभग पूरा विश्व मानता है कि किसी देश को युद्ध उचित कारणों यानी आत्मरक्षा अथवा दूसरों को जनसंहार से बचाने के लिए ही करना चाहिए अर्थात युद्ध साधनों का सीमित मात्रा में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, इस धारणा को 'न्याय युद्ध' कहा जाता है।

**9.** (i) अंटार्कटिका संधि - 1959

(ii) मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल – 1987

(iii) अंटार्कटिका पर्यावरणीय न्यायाचार – 1991

**10.** निःसन्देह टेलीग्राफ, टेलीफोन, माइक्रोचिप, इन्टरनेट इत्यादि नवीनतम आविष्कारों ने विश्व के विभिन्न हिस्सों के बीच क्रान्तिकारी बदलाव किए हैं। अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित हुई है जिससे विचारों का आदान-प्रदान आसान हुआ है।

**11.** डॉ.बी. आर अंबेडकर ने इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी तथा शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन की स्थापना की। अंबेडकर रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के गठन की योजनाकार थे। अंबेडकर संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के उत्थान का पुरजोर समर्थन किया।

**12.** चौथे आम चुनाव (1967) से पूर्व समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया के द्वारा 'गैर कांग्रेसवाद' का नारा दिया गया था जिसका अर्थ गैर कांग्रेसी पार्टियों का एकजुट होना था जिससे कांग्रेस को पराजित किया जा सके। इसके परिणाम स्वरूप 1967 के चुनाव में कांग्रेस अनेक राज्यों में अपनी सत्ता खो बैठी तथा केन्द्र में भी उसकी सीटें पिछले तीन आम चुनावो के अपेक्षा कम हो गई।

**13.** 1969 में कांग्रेस विभाजन के पश्चात् जो दो राजनीतिक दल सामने आए उनके नाम कांग्रेस - आर (रिक्विजिनिस्ट) तथा कांग्रेस (ओ)। कांग्रेस (आर) का नेतृत्व श्रीमती गाँधी कर रही थीं, वहीं कांग्रेस (ओ) का नेतृत्व सिंडिकेट कर रहा था जिसके अध्यक्ष निजलिंगप्पा थे। इसके परिणाम स्वरूप कांग्रेस आर को नयी नीतियाँ बनानी पड़ी तथा आगे चलकर वह इसमें सफल रहीं जबकि कांग्रेस ओ आगे चलकर पूरी तरह से समाप्त हो गई।

**14.** सरकार ने आर्थिक उदारीकरण की नीति के जरिए मशीनीकृत मत्स्य आखेट और भारतीय समुद्र में बड़े पैमाने पर मत्स्य दोहन के लिए बॉटम ट्राउलिंग जैसी प्रौद्योगिकी के उपयोग की अनुमति दी, तो मछुआरों के समक्ष आजीविका का संकट आ खड़ा हुआ और वे राष्ट्रीय स्तर मंच पर 'नेशनल फिशवर्कर्स फोरम' के नाम से एक संगठन के रूप में आ खड़े हुए, जो कि केरल के मछुआरों की एक आवश्यकता थी।

**15.** ई.वी. रामास्वामी नायकर (पेरियार) का जन्म **1979** में हुआ। पेरियार ने जातिगत भेदभाव का विरोध किया तथा हिंदी व उतर भारत की संस्कृति को दक्षिण भारत पर थोंपने के विरूद्ध आंदोलन चलाया। पेरियार ने द्रविड़ कषगम नामक संस्था की स्थापना की।

**16.** 1973 में, आनंदपुर साहिब में हुए एक सम्मेलन में क्षेत्रीय स्वायत्तता से जुड़े प्रस्ताव को अकालियों के एक तबके ने पास किया। उस प्रस्ताव में केन्द्र-राज्य संबंधों को पुनर्गठित करने की बात कही गयी थी। इस प्रस्ताव में सिख 'कौम' (नेशन या समुदाय) की आकांक्षाओं पर जोर देते हुए सिखों के 'बोलवाला' प्रभुत्व या वर्चस्व का एक ऐलान किया गया था। अपने इसी प्रस्ताव के कारण सह संघात्मकता को सुदृढ़ बनाने के स्थान पर एक अलग सिख राष्ट्र की माँग के तौर पर देखा जाता है।

## खण्ड-"स"

**दीर्घउत्तरीय प्रश्न -**

**17.** विश्व में इस्पात की मांग बढ़ी तो उड़ीसा एक महत्वपूर्ण जगह के रूप में उभरा। उड़ीसा में लोहा अयस्क का विशाल भंडार था उड़ीसा की तत्कालीन राज्य सरकार ने अंतरराष्ट्रीय इस्पात निर्माताओं और राष्ट्रीय स्तर के इस्पात निर्माताओं के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए। सरकार के अनुसार ऐसा करने से आवश्यक पूंजी निवेश भी होगा तथा रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। लौह अयस्क के ज्यादातर भंडार उड़ीसा के सर्वाधिक विकसित इलाकों में है, विशेषकर आदिवासी इलाकों में तथा आदिवासियों को यह डर है

कि अगर यहां उद्योग लगाए गए तो उन्हें अपने घर-बार से विस्थापित होना पड़ेगा और आजीविका भी छिन जाएगी। साथ ही पर्यावरण विदों को इस बात का डर है कि खनन और उद्योग से पर्यावरण प्रदूषित होगा।

**18.** 1962 में हुए भारत-चीन युद्ध ने भारत की छवि को निम्नलिखित तरीकों से धक्का पहुँचाया -

(i) पण्डित नेहरू की विदेश नीति की आलोचना हुई।

(ii) तत्कालीन रक्षामंत्री वी.के.कृष्ण मेनन को त्याग पत्र देना पड़ा।

(iii) पण्डित नेहरू के मंत्रीमण्डल के विरूद्ध प्रथम बार अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हुई।

(iv) भारत सरकार का ध्यान पूर्वोत्तर राज्यों के विकास की तरफ गया जो कि पहले अनदेखी का शिकार थे। चीन ने यहाँ घुसपैठ करने की नीति इस युद्ध से पूर्व अपनाई थी।

(v) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी विभाजन का शिकार हुई। इस पार्टी से अलग होकर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (CPI-M) का गठन हुआ।

(vi) भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि धुमिल हुई।

(vii) भारत को अमेरिका व ब्रिटेन दोनों से सैन्य मदद मांगनी पड़ी जिनसे भारत के संबंध अधिक अच्छे नहीं थे।

**19.** जनवरी 1974 में गुजरात के छात्रों ने खाद्यान्न, खाद्य तेल तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती हुई कीमतों तथा उच्च पदों पर जारी भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया। छात्र आन्दोलन में बड़ी राजनीतिक पार्टियाँ भी सम्मिलित हो गईं और इस आन्दोलन ने विकराल रूप धारण कर लिया। ऐसी स्थिति में गुजरात में राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ा।

विपक्षी दलों ने राज्य की विधानसभा के लिए पुनः चुनाव कराने की माँग की। कांग्रेस (ओ) के प्रमुख नेता मोरारजी देसाई ने कहा कि यदि राज्य में नए सिरे से चुनाव नहीं करवाए गए तो मैं अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठ जाऊँगा। मोरारजी देसाई अपने कांग्रेस के दिनों में इंदिरा गाँधी के मुख्य विरोधी रहे थे। विपक्षी दलों द्वारा समर्पित छात्र आन्दोलन के गहरे दबाव में जून 1975 में विधानसभा के चुनाव हुए। कांग्रेस इन चुनावों में हार गई।

**20.** 1990 के दशक को गठबंधन की राजनीति के उदय के रूप में देखा जाता है। 1947 से 1989 तक भारतीय राजनीति एक दल के प्रभुत्व पर आधारित थी। 1989 में जनता दल व अन्य क्षेत्रीय दलों ने राष्ट्रीय मोर्चा गठबंधन सरकार बनाई। इन चुनावों के बाद भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के प्रभाव में निरंतर वृद्धि हुई। 1991 की नरसिम्हा राव सरकार को AIDMK व अन्य क्षेत्रीय दलों का समर्थन प्राप्त था। 1990 के दशक की गठबंधन की राजनीति में दो बातें अहम थी। प्रथम भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रवाद व हिन्दुत्व की नीति के आधार पर निरंतर सफलता प्राप्त कर रही थी। इसी दौरान कांग्रेस का प्रभाव केन्द्र व राज्यों में निरंतर घटने लगा। इस युग को सौदेबाजी वाले गठबंधन का युग कहा जाता है क्योंकि इस समय केन्द्र सरकार में क्षेत्रीय दलों की भुमिका अहम रही तथा क्षेत्रीय मुद्दों को मजबूती से इन दलों द्वारा उठाया गया।

## खण्ड-"द"

**निबन्धात्मक प्रश्न -**

**21.** **शीतयुद्ध का अर्थ -** द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत संघ दो महाशक्तियों के रूप में उभरे। दोनों देशों ने पूँजीवादी व साम्यवादी खेमों को जन्म दिया। सोवियत संघ द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात पूर्वी यूरोप व मध्य एशिया में साम्यवाद के प्रचार-प्रसार में जुट गया। अत: पूँजीवादी देशों ने साम्यवाद के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए एकजुट होने का निर्णय लिया। दोनों खेमों के बीच वैचारिक द्वंद्व प्रारम्भ हुआ। यह वैचारिक द्वंद्व 1945-91 तक चला। इसी द्वंद्व को शीतयुद्ध के नाम से पुकारा जाता हैं।

**शीतयुद्धकाल में सैन्य गुटों का जन्म -**

**(i) नाटो NATO** (North Atlantic Treaty Organisation - 1949 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा पूंजीवादी राष्ट्रों के गठबंधन से उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन नाटो का गठन किया गया जिसमें 12 सदस्य शामिल थे वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 30 है इस संधि संगठन में यह तय किया गया कि किसी भी देश पर हमला होने की स्थिति में शत्रु के खिलाफ नाटो सदस्य मिलकर उसका सामना करेंगे। नाटो सदस्य - स.रा.अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, इटली, प.जर्मनी, नॉर्वे, पुर्तगाल, फ्रांस, बेल्जियम, निदरलैण्ड, तुर्की, ग्रीस। यह संगठन वर्तमान में अस्तित्व में जबकि निम्न संगठन अस्तित्व हीन हो चुके है।

**(ii) वारसा संधि** (1955) साम्यवादी देशों के द्वारा नाटो के विरुद्ध पोलैंड के वारसा शहर में वारसा संधि की गई। इस संधि का उद्देश्य नाटो के विरुद्ध साम्यवादी देशों को सैन्य गठबंधन में शामिल करना था तथा इस संधि में शामिल किसी भी देश पर हमला होने पर सभी देश मिलकर इसका सामना करेंगे इस संधि का मुख्य आधार था। सदस्य - (सोवितय संघ, पौलेण्ड, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया, बुल्गारिया)।

**(iii) सीटो** (SEATO - South East Asian Treaty Organisation (1954) दक्षिण पूर्वी एशियाई संधि संगठन की स्थापना पूंजीवादी देशों के द्वारा एशिया में सैन्य संगठन के रूप में की गई। सदस्य-(अमेरिका, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, न्यूजीलैण्ड, फिलिपीन्स, थाइलैण्ड, पाकिस्तान)।

**(iv) सेंटो** CENTO (Central Treaty Organisation) 1955 केंद्रीय संधि संगठन की स्थापना एशिया में की गई। पूर्व में इसका नाम बगदाद संधि था बाद में इराक द्वारा समझौते से



UTKARSH CLASSES
Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

अलग होने के पश्चात् परिवर्तन कर केंद्रीय संधि संगठन रखा गया। सदस्य - (तुर्की, इराक, इरान, पाकिस्तान, ग्रेट ब्रिटेन)

**दोनों महाशक्तियों द्वारा गुट बनाए जाने के पीछे महत्वपूर्ण उद्देश्य -**

(i) महाशक्तियाँ गुट में शामिल राष्ट्रों के महत्वपूर्ण संसाधन जैसे तेल व खनिज संसाधनों पर अधिकार चाहती थी।

(ii) महाशक्तियाँ गुट में शामिल राष्ट्रों के भू क्षेत्रों का उपयोग अपने हथियार व सैनिक अड्डों की स्थापना के लिए करना चाहती थी।

(iii) महाशक्तियाँ गुट में शामिल राष्ट्रों के सैनिक ठिकानों का उपयोग दूसरे देशों के विरुद्ध जासूसी के लिए करना चाहती थी।

(iv) महाशक्तियाँ गुटों में शामिल राष्ट्रों से आर्थिक सहयोग प्राप्त कर अपने सैनिक संगठनों के माध्यम से अपने हितों को पूरा करना चाहती थी।

**अथवा**

गुटनिरपेक्ष देश शीतयुद्ध के दौरान महज मध्यस्थता करने वाले देश भर नहीं थे। गुटनिरपेक्ष आंदोलन में शामिल अधिकांश देशों को 'अल्प विकसित देशों' का दर्जा मिला था। इन देशों के सामने मुख्य चुनौती आर्थिक रूप से और ज्यादा विकास करने तथा अपनी जनता को ग़रीबी से उबारने की थी । नव स्वतंत्र देशों की आज़ादी की सुरक्षा के लिहाज़ से भी आर्थिक विकास महत्त्वपूर्ण था। बग़ैर टिकाऊ विकास के कोई देश सही मायनों में आज़ाद नहीं रह सकता। उसे धनी देशों पर निर्भर रहना पड़ता। इसमें वह औपनिवेशिक देश भी हो सकता था जिससे राजनीतिक आज़ादी प्राप्त की गई।

इसी समझ से नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की धारणा का जन्म हुआ। 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापार और विकास से संबंधित सम्मेलन (यूनाइटेड नेशंस कॉन्फ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट-अंकटाड) में 'टुवार्ड्स अ न्यू ट्रेड पॉलिसी फॉर डेवलपमेंट' शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इस रिपोर्ट में वैश्विक व्यापार प्रणाली में सुधार का प्रस्ताव किया गया था। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि सुधारों से -

(i) अल्प विकसित देशों को अपने उन प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त होगा जिनका दोहन पश्चिम के विकसित देश करते हैं:

(ii) अल्प विकसित देशों की पहुँच पश्चिमी देशों के बाज़ार तक होगी; वे अपना सामान बेच सकेंगे और इस तरह ग़रीब देशों के लिए यह व्यापार फायदेमंद होगा;

(iii) पश्चिमी देशों से मंगायी जा रही प्रौद्योगिकी की लागत कम होगी और

(iv) अल्प विकसित देशों की अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों में भूमिका बढ़ेगी।

गुटनिरपेक्षता की प्रकृति धीरे-धीरे बदली और इसमें आर्थिक मुद्दों को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। बेलग्रेड में हुए पहले सम्मेलन (1961) में आर्थिक मुद्दे ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं थे। सन् 1970 के दशक के मध्य तक आर्थिक मुद्दे प्रमुख हो उठे। इसके परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्ष आंदोलन आर्थिक दबाव-समूह बन गया। सन् 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध तक नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को चलाये रखने के प्रयास मंद पड़ गए। इसका मुख्य कारण था विकसित देशों द्वारा किया जा रहा तेज विरोध । विकसित देश एक सुर में विरोध कर रहे थे जबकि गुटनिरपेक्ष देशों को इस विरोध के बीच अपनी एकता बनाए रखने के लिए जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ रही थी ।

**22.** जब दूसरा विश्व युद्ध समाप्त हुआ तब यूरोप के अनेक नेता 'यूरोप के सवालों' को लेकर परेशान रहे। क्या यूरोप को अपनी पुरानी दुश्मनियों को फिर से शुरू करना चाहिए या अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक योगदान करने वाले सिद्धांतों और संस्थाओं के आधार पर उसे अपने संबंधों को नए सिरे से बनाना चाहिए? दूसरे विश्वयुद्ध ने उन अनेक मान्यताओं और व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर दिया जिसके आधार पर यूरोपीय देशों के आपसी संबंध बने थे। 1945 तक यूरोपीय देशों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं की बर्बादी तो झेली ही, उन मान्यताओं और व्यवस्थाओं को ध्वस्त होते भी देख लिया जिन पर यूरोप खड़ा हुआ था।

1945 के बाद यूरोप के देशों में मेल-मिलाप को शीतयुद्ध से भी मदद मिली। अमरीका ने यूरोप की अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के लिए जबरदस्त मदद की। इसे मार्शल योजना के नाम से जाना जाता है। अमेरिका ने 'नाटो' के तहत एक सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को जन्म दिया। मार्शल योजना के तहत 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना की गई जिसके माध्यम से पश्चिमी यूरोप के देशों को आर्थिक मदद दी गई। यह एक ऐसा मंच बन गया जिसके माध्यम से पश्चिमी यूरोप के देशों ने व्यापार और आर्थिक मामलों में एक-दूसरे की मदद शुरू की। 1949 में गठित यूरोपीय परिषद् राजनैतिक सहयोग के मामले में एक अगला कदम साबित हुई। यूरोप के पूंजीवादी देशों की अर्थव्यवस्था के आपसी एकीकरण की प्रक्रिया चरणबद्ध ढंग से आगे बढ़ी। 1951 में पश्चिमी यूरोप के 6 देश फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नीदरलैण्ड, लज्मबर्ग ने पेरिस संधि के माध्यम से यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय का गठन किया। 1957 में रोम की संधि के माध्यम से यूरोपीयन आर्थिक समुदाय (EEC) तथा यूरोपीय एटमी समुदाय (Euratom) का गठन किया गया। यूरोपीयन पार्लियामेंट के गठन के बाद इस प्रक्रिया ने राजनीतिक स्वरूप प्राप्त कर लिया। सोवियत गुट के पतन के बाद इस प्रक्रिया में तेजी आयी और 1992 में इस प्रक्रिया की परिणति यूरोपीय संघ की स्थापना के रूप में हुई। यूरोपीय संघ के रूप में समान विदेश और सुरक्षा नीति, आंतरिक मामलों तथा न्याय से जुड़े मुद्दों पर सहयोग और एकसमान मुद्रा के चलन के लिए रास्ता तैयार हो गया। यूरोपीय संघ के गठन के समय 12 देश इसके सदस्य थे। 2004 में साइप्रस चेक

गणराज्य, एस्टोनिया, हंगरी, लताविया, लिथुआनिया, माल्टा, पोलैण्ड, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया यूरोपीस संघ में शामिल हुए। 2007 में बुल्गारिया व रोमानिया शामिल हुए। 2013 में क्रोएशिया यूरोपीय संघ 28 वाँ सदस्य बना तथा 2016 में ब्रिटेन ब्रेक्जिट के पश्चात यूरोपीय संघ के अलग हो गया।

**अथवा**

चीनी नेतृत्व ने 1970 के दशक में कुछ बड़े नीतिगत निर्णय लिए चीन ने 1972 में अमरीका से संबंध बनाकर अपने राजनैतिक और आर्थिक एकांतवास को खत्म किया। 1973 में प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई ने कृषि, उद्योग, सेना और विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आधुनिकीकरण के चार प्रस्ताव रखे। 1978 में तत्कालीन नेता देंग श्याओपेंग ने चीन में आर्थिक सुधारों और 'खुले द्वार की नीति' की घोषणा की। अब नीति यह हो गयी कि विदेशी मुद्रा और प्रौद्योगिकी के निवेश से उच्चतर उत्पादकता को प्राप्त किया जाए। बाजार मूलक अर्थव्यवस्था को अपनाने के लिए चीन ने अपना तरीका आजमाया। 1982 में खेती का निजीकरण किया गया और उसके बाद 1998 में उद्योगों के व्यापार संबंधी अवरोधों को सिर्फ 'विशेष आर्थिक क्षेत्रों' के लिए ही हटाया गया है जहाँ विदेशी निवेशक अपने उद्यम लगा सकते हैं।

नयी आर्थिक नीतियों के कारण चीन की अर्थव्यवस्था को अपनी जड़ता से उबरने में मदद मिली। कृषि के निजीकरण के कारण कृषि उत्पादों तथा ग्रामीण आय में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी हुई। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निजी बचत की मात्रा बढ़ी और इससे ग्रामीण उद्योगों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी। उद्योग और कृषि दोनों ही क्षेत्रों में चीन की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर तेज रही। व्यापार के नये कानून तथा विशेष आर्थिक क्षेत्रों (स्पेशल इकॉनामिक जोन) के निर्माण से विदेश व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। चीन पूरे विश्व में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए सबसे आकर्षक देश बनकर उभरा। चीन के पास विदेशी मुद्रा का अब विशाल भंडार है और इसके दम पर चीन दूसरे देशों में निवेश कर रहा है। चीन 2001 में विश्व व्यापार संगठन में शामिल हो गया। इस तरह दूसरे देशों के लिए अपनी अर्थव्यवस्था खोलने की दिशा में चीन ने एक कदम और बढ़ाया। अब चीन की योजना वैश्विक अर्थव्यवस्था से अपने जुड़ाव को और गहरा करके भविष्य की विश्व व्यवस्था को एक मनचाहा रूप देने की है।

**23.** स्वतंत्र भारत के समक्ष अनेक चुनौतियाँ थी इनमें से तीन प्रमुख थी
(i) देश की अखंडता को बनाये रखना
(ii) लोकतंत्र की स्थापना
(iii) आर्थिक विकास।

**(i) देश की क्षेत्रीय अखण्डता को कायम रखने की चुनौती -** आजादी के तुरन्त बाद देश की क्षेत्रीय अखण्डता को कायम रखने की चुनौती सबसे प्रमुख थी। एकता के सूत्र में बँधे एक ऐसे भारत को गढ़ने की चुनौती थी जिसमें भारतीय समाज की समस्त विविधताओं के लिए जगह हो। भारत अपने आकार व विविधता के कारण एक उपमहाद्वीप है। यहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों, वर्गों, भाषाओं, बोलियों, संस्कृति को मानने वाले लोग निवास करते हैं।

**(ii) लोकतांत्रिक व्यवस्था को कायम करना -** दूसरी चुनौती लोकतांत्रिक व्यवस्था को सफलतापूर्वक लागू रखने की थी। भारत ने संसदीय शासन पर आधारित प्रतिनिधित्व मूलक लोकतंत्र को अपनाया। भारतीय संविधान भारत की आन्तरिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की वैधानिक अभिव्यक्ति है। संविधान में मौलिक अधिकारों की व्यवस्था की गयी है तथा प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार भी दिया गया है।

**(iii) आर्थिक विकास हेतु नीति निर्धारित करना -** स्वतंत्रता के तुरन्त बाद तीसरी प्रमुख चुनौती थी - आर्थिक विकास हेतु नीतियों का निर्धारण करना। इन नीतियों के आधार पर सम्पूर्ण समाज का विकास होना था, किन्हीं विशेष वर्गों का नहीं। संविधान में भी इस बात का स्पष्ट तौर पर उल्लेख था कि समाज में सभी वर्गों के साथ समानता का व्यवहार किया जाए तथा सामाजिक रूप से वंचित व पिछड़े वर्गों तथा धार्मिक - सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को विशेष सुरक्षा प्रदान की जाए।

इन चुनौतियों का भी सफलतापूर्वक सामना हमारे नीति निर्माताओं ने किया। भारतीय संविधान के द्वारा भारत में एक लोक-कल्याणकारी राज्य की स्थापना किए जाने की व्यवस्था की गयी। इसी व्यवस्था के अन्तर्गत भारतीयों को अवसर की समानता तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गयी। सरकार से यह भी अपेक्षा की गयी कि वह अपंगों, वृद्धों व बीमार व्यक्तियों की उचित सहायता करे। उपर्युक्त चुनौतियों का सामना भारत के नीति - निर्माताओं ने डटकर किया। भारत में लोकतंत्र की धारणा कारगर सिद्ध हुई राज्यों के भाषाई पुनर्गठन के बावजूद देश की एकता और अधिक मजबूत हुई क्योंकि हमारे स्वतंत्रता-संग्राम की गहरी प्रतिबद्धता लोकतंत्र में थी।

**अथवा**

14 - 15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि को हिन्दुस्तान आजाद हुआ। हिन्दुस्तान की जनता इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी परन्तु यह कोई आसान काम नहीं था। आजाद हिन्दुस्तान का जन्म अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में हुआ। भारत की स्वतंत्रता के दौरान अन्य कोई राष्ट्र इस प्रकार की परिस्थितियों में स्वतंत्र नहीं हुआ था। आजादी मिलने का स्वप्न देश के बँटवारे के साथ पूरा हो सका। सन् 1947 का वर्ष भयंकर हिंसा व विस्थापन की त्रासदी का वर्ष था। इन्हीं कठिन परिस्थितियों में अपने विभिन्न लक्ष्यों को आजाद हिन्दुस्तान को प्राप्त करना था। नए राष्ट्र के सामने अनेक चुनौतियाँ भी थीं जिनका सामना हिन्दुस्तान को करना था।



UTKARSH CLASSES
Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

बँटवारे के कारण बड़े पैमाने पर हिंसा हुई। लोग विस्थापित हुए तथा इस घटना से धर्मनिरपेक्ष भारत की धारणा पर ही आँच आने लगी। दोनों देशों के भू- भाग को रेखांकित करते हुए सीमा-रेखा खींच दी गई। इस प्रकार यह कथन पूर्णतः उपयुक्त है कि "आजाद हिन्दुस्तान का जन्म अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में हुआ।"।

भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाने हेतु नेतागणों के प्रयास- स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद कुछ ऐसे संगठन सक्रिय थे जो भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए हिन्दुओं को लामबंद करने की कोशिश में लगे थे, परन्तु भारत की कौमी सरकार के अधिकांश नेतागण सभी नागरिकों को समान दर्जा देने के हिमायती थे, चाहे नागरिक किसी भी धर्म का हो। हमारे नेताओं के धर्मनिरपेक्ष राज्य के आदर्श की अभिव्यक्ति भारतीय संविधान में हुई। नवीन संविधान के द्वारा भारत में धर्मनिरपेक्ष समाजवादी राज्य की स्थापना की गयी है। इस प्रकार समस्त सम्प्रदायों के लोगों को समान अधिकार व अवसर प्रदान किए गए है। भारतीय संविधान की मुख्य विशेषता भारत में राष्ट्रीयता व एकता की भावना को बढ़ाना है। पं. जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में, 'हमें अपने अल्पसंख्यकों के साथ सभ्यता और शालीनता के साथ पेश आना है। लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था में हमें उन्हें नागरिक के अधिकार देने होंगे और उनकी रक्षा करनी होगी। अगर हम ऐसा करने में कामयाब नहीं होते तो यह एक नासूर बन जाएगा जो पूरी राज-व्यवस्था में जहर फैलाएगा और शायद उसको तबाह भी कर दे।'

UTKARSH CLASSES

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

# उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

**उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध**

QR Code Scan कर आज ही **'उत्कर्ष एप'** डाउनलोड करें

## Academic Session 2022-23

| | | | |
|---|---|---|---|
| Class VI-VIII | ~~₹10,000~~ | ₹1999 | CBSE \| RBSE & Other 7 State Boards |
| Class IX-X | ~~₹15,000~~ | ₹2999 | |
| Class XI-XII | ~~₹18,000~~ | ₹3499 | |

| ₹1200/- per subject Live | ₹600/- per subject Recorded |
|---|---|

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• **LIVE & Recorded Classes** • **English & Hindi Medium**

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

### उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

# UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com